International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 10 Issue 1 Ser. II || January 2021 || PP 65-66

''नई शिक्षा नीति 2022 भारतीय भाषा, कला एवं संस्कृति का संरक्षण एवं संवर्धन''

डॉ0 अलका तिवारी
एसोसिएट प्रोफेसर
चित्रकला विभाग
एन0ए0एस0 कॉलेज, मेरठ

सारांश–

भारत, संस्कृति का समृद्ध भण्डार है तथा यहाँ की कला, साहित्यिक कृतियों, प्रथाओं, परम्पराओं, भाषाई अभिव्यक्तियों, कलाकृतियों, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक त्यौहारों के स्थलों इत्यादि में यह परिलक्षित होता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में लेख है कि भारत की इस सांस्कृतिक संपदा का संरक्षण, संवर्धन एवं प्रसार, देश की उच्चतम प्राथमिकता होनी चाहिए क्योंकि यह देश की पहचान के साथ–साथ अर्थव्यवस्था के लिए भी महत्वपूर्ण है। संस्कृति का प्रसार करने का अर्थव्यवस्था के लिए भी महत्वपूर्ण है। संस्कृति का प्रसार करने का सबसे प्रमुख माध्यम कला है। कला–सांस्कृतिक पहचान, जागरूकता को समृद्ध करने और समुदायों को उन्नत करने के अतिरिक्त, व्यक्तियों में संज्ञानात्मक और सृजनात्मक क्षमताओं का संवर्धन तथा व्यक्तिगत प्रसन्नता को बढ़ाने के लिए जानी जाती है। व्यक्तियों की प्रसन्नता/कल्याण, संज्ञानात्मक विकास और सांस्कृतिक पहचान वह महत्वपूर्ण कारण हैं जिसके लिए सभी प्रकार की भारतीय कलाएं, प्रारंभिक बाल्यावस्था, देखभाल व शिक्षा से आरम्भ करते हुए शिक्षा के सभी स्तरों पर छात्रों को प्रदान की जानी चाहिए।

नई शिक्षा नीति, भारतीय जीवन मूल्यों पर आधारित होने के साथ–साथ, भारतीय परंपराओं, भारतीय संस्कृति एवं भारतीय भाषाओं को प्रोत्साहन, पुनस्थार्पन एवं प्रसार पर जोर देती है, जिससे यह भारत को एक समर्थ, गौरवशाली, आत्मनिर्भर बनाने में निश्चय ही प्रमुख भूमिका निभाएगी।

भारतवर्ष के इतिहास में पहली बार ऐसा हुआ कि शिक्षा नीति बनाने के लिए देश की लगभग 2.5 लाख ग्राम पंचायतें, 6600 ब्लॉक और 650 जिलों से विचार लिए गए। इसमें शिक्षाविदों, अध्यापकों, अभिभावकों, जनप्रतिनिधियों एवं व्यापक स्तर पर छात्रों से भी सुझाव लेकर उनका मंथन किया गया। जन आकांक्षाओं के अनुरूप एवं राष्ट्रीय आवश्यकता और चुनौतियों के अनुरूप नई शिक्षा नीति 2020 की घोषणा की गई है।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा–''यह शिक्षा के क्षेत्र में बहुप्रतीक्षित सुधार है, जिससे लाखों लोगों का जीवन बदल जाएगा। एक भारत–श्रेष्ठ भारत पहल के तहत इसमें संस्कृत समेत भारतीय भाषाओं को बढ़ावा दिया जाएगा।''

भाषा, निःसंदेह, कला एवं संस्कृति से अटूट रूप से जुड़ी हुई है। विभिन्न भाषाएं, दुनिया को भिन्न तरीके से देखती हैं इसलिए मूल रूप से किसी भाषा को बोलने वाला व्यक्ति अपने अनुभवों को कैसे समझता है या उसे किस प्रकार ग्रहण करता है यह उस भाषा की संरचना से तय होता है। संस्कृति हमारी भाषाओं में समाहित है। साहित्य, नाटक, संगीत, फिल्म आदि के रूप में कला की पूरी तरह वर्णन करना, बिना भाषा के संभव नहीं है। संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन करना होगा। भाषाओं को अधिक व्यापक रूप में बातचीत और शिक्षण अधिगम के लिये प्रयोग में लिया जाना चाहिए। भारतीय भाषाओं, तुलनात्मक साहित्य, सृजनात्मक लेखन, कला, संगीत, दर्शनशास्त्र आदि के सशक्त विभागों एवं कार्यक्रमों को देश भर में शुरू किया जाएगा और उन्हें विकसित किया जाएगा, साथ ही इन विषयों में दोहरी डिग्री चार वर्षीय बी.एड. सहित डिग्री कोर्स विकसित किए जांएगे। ये विभाग एवं कार्यक्रम, विशेष रूप से उच्चतर योग्यता के भाषा शिक्षकों के एक बड़े कैडर को विकसित करने में मदद करेगा, साथ ही साथ कला, संगीत, दर्शनशास्त्र एवं लेखन के शिक्षकों को भी तैयार करेगा जिनकी देश भर में इस नीति को क्रियान्वित करने हेतु तुरंत आवश्यकता होगी। नेशनल रिसर्च फाउण्डेशन (एनआरएफ) इन क्षेत्रों में गुणतत्तापूर्ण अनुसंधान हेतु वित्त उपलब्ध करायेगा।

स्थानीय संगीत, कला, भाषाओं एवं हस्तशिल्प को प्रोत्साहित करने के लिए तथा यह सुनिश्चित करने के लिए कि छात्र जहाँ अध्ययन कर रहे हों वे वहां की संस्कृति एवं स्थानीय ज्ञान को जान सकें, उत्कृष्ट स्थानीय कलाकारों एवं हस्तशिल्प में कुशल व्यक्तियों को शिक्षक के रूप में नियुक्त किया जाएगा। प्रत्येक उच्चतर शिक्षण संस्थान, प्रत्येक स्कूल और स्कूल कॉम्पलेक्स यह प्रयास करेगा कि कलाकार वहीं निवास करें जिससे कि छात्र कला, सृजनात्मकता तथा क्षेत्र/देश की समृद्धि को बेहतर रूप से जान सकें।

सभी भारतीय भाषाओं उनसे सम्बंधित सम्रद्ध स्थानीय कला एवं संस्कृति के संरक्षण हेतु उनका वेब आधारित प्लेटफार्म/पोर्टल/विकीपिडिया के माध्यम से दस्तावेजी करण किया जायेगा। संरक्षण के इन प्रयासों तथा इनसे जुड़े अनुसन्धान परियोजनाओं, उदाहरण के लिये इतिहास, पुरातत्व भाषा विज्ञान आदि को एन आर एफ द्वारा वित्तीय सहायता दी जायेगी।

भारतीय भाषा, कला और संस्कृति का सर्वधन एवं प्रसार तभी समंव है जब उन्हें नियमित तौर पर प्रयोग किया जाये तथा शिक्षण, अधिगम के लिये प्रयोग किया जाये। उनके उत्कृष्ठ प्रदर्शन/प्रस्तुति पर पुरूस्कार जैसे प्रोत्साहन पूर्ण

कदम उठाये जाये स्थानीय मास्टर्स तथा उच्चतर शिक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत भारतीय भाषाओं, कला एवं संस्कृति के अध्ययन के लिये सभी आयु के लोगों के लिये छात्र वृति की स्थापना की जायेगी शास्त्रीय, आदिवासी और लुप्तप्रायः भाषाओं साहित सभी भारतीय भाषाओं को संरक्षित और बढ़ावा देने के प्रयास किये जायेगे। प्रत्येक भाषा के लिये अकादमी स्थापित की जायेगी जिनसे हर भाषा से श्रेष्ठ विद्वान एवं मूल रूप से वह भाषा बोलने वाले लोग सम्मिलित किये जायेगे।

भारत इसी तरह सभी शास्त्रीय भाषाओं और साहित्य का अध्ययन करने वाले अपने संस्थानों और विश्वविद्यालायों के साथ सम्बद्ध होने या उनमें विलय का प्रयास करेंगे ताकि एक सुदृढ़ एवं गहन बहुविषयी कार्यक्रम के हिस्से के तौर पर संकाय काम कर सकें एवं छात्र प्रशिक्षण प्राप्त कर सकें। समान उद्देश्य प्राप्त करने के लिए, भाषाओं को समर्पित विश्वविद्यालय भी बहुविषयी बनेंगे ताकि विभिन्न भाषा उत्कृष्ट भाषा शिक्षक तैयार हो सकें। इसके अलावा, यह भी प्रस्तावित है कि भाषाओं के लिए एक नया संस्थान स्थापपित किया जाएगा। विश्वविद्यालय के परिसर में एक पाली, फारसी एवं प्राकृत भाषा के लिए नया संस्थान स्थापित किया जाएगा। जिन संस्थानों एवं विश्वविद्यालय में भारतीय कला, कला इतिहास एवं भारत विद्या का अध्ययन किया जा रहा है वहाँ भी इसी प्रकार के कदम उठाये जायेंगे।

अध्ययन अध्यापन की प्रक्रिया में मातृभाषा का विशेष महत्व होता है। जिससे बालक के व्यक्तित्व का विकास होता है और उसके सीखने की गति भी बढ़ती है। मनोविज्ञान के अनुसार बालक अपनी मातृभाषा अथवा क्षेत्रीय भाषा में सरलता एवं शीघ्रता से सीखता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए नई शिक्षा नीति में भाषाई विविधता को महत्त्व दिया गया है–

1. नई शिक्षा नीति के अनुसार–पाँचवीं कक्षा तक मातृभाषा, की बात कही गई है। इसे कक्षा आठ या उससे आगे भी बढ़ाया जा सकता है। विदेशी भाषाओं की पढ़ाई सेकेंडरी लेवल से होगी। बाकी विषय चाहे वह अंग्रजी में ही क्यों ना हो, एक सब्जेक्ट के तौर पर ही पढ़ाया
2. संस्कृति भाषा के वृहद एवं महत्वपूर्ण योगदान तथा विभिन्न विद्याओ एवं विषयों के साहित्य, सांस्कृतिक महत्व, वैज्ञानिक प्रकृति, के चलते संस्कृत को केवल संस्कृत पाठशालाओं एवं विश्वविद्यालयों तक सीमित न रखते हुए इसे मुख्य धारा में लाया जायेगा।
3. नई नीति इस बात को स्वीकारती है कि शिक्षार्थियों को भारत की समृद्ध विविद्यता का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त होना चाहिए। **'एक भारत श्रेष्ठ भारत'** के तहत इस दिशा में देश के 100 पर्यटन स्थलों की पहचान की जाएगी, जहाँ शिक्षण संस्थान छात्रों को इन क्षेत्रों के बारे में ज्ञानवर्धन करने के लिए स्थलों और उनके इतिहास, वैज्ञानिक योगदान, परम्पराओं, स्देशी साहित्य और ज्ञान आदि का अध्ययन करने के लिए भेजेंगे।
4. भारतीय वाङ्गमय में कला और भाषा का अन्योन्ययाश्रित सम्बन्ध है तथा ये एक–दूसरे के बिना अधूरे हैं। किसी भी कला की अभिव्यक्ति का सीधा सम्बन्ध भाषा से होता है। पुरातत्वकालीन कलाकृतियों में भी तत्सम की भाषा ही अभिव्यक्ति का साधन थी, चाहे वह अरबी, फारसी या कोई भी यूरोपीय परिवार की भाषा रही हो। भारतीय संस्कृति **'सर्वे भवन्तु सुखिनः'** एवं **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** के चिन्तन पर आधारित होकर समाज का मार्गदर्शन करते हुए भारत को वास्तव में **'अतुल्य और अनुपम भारत'** बनाती है।

निष्कर्ष–

इस प्रकार कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारत के विभिन्न भाषाओं, बोलियों, कला एवं संस्कृति के संवर्धन हेतु पर्याप्त प्रावधान किये गये हैं। यदि इन सभी प्रावधानों का शतप्रतिशत क्रियान्वयन हो गया तो भारतीय सनातन संस्कृति अपने गौरवशाली अतीत को पुनः प्राप्त कर भारत को विश्व के अग्रिम पंक्ति के देशों में स्थापित करने में सफल होगी।

सन्दर्भ सूची

1. मीना, शर्मा मोनिका, HANS SHODH SUDHA.vol. Issue 3, (2021), pp. 59-62
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मानव विकास मन्त्रालय, भारत सरकार। पृष्ठ 90
3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति–तिवारी, रविन्द्र नाथ पृष्ठ–9, 2021
4. गंगवाल, सुभाष, 'नई शिक्षा नीति 21वीं सदी को चुनौतियों का करेगी
5. मुकाबला', दैनिक नव ज्येति पृष्ठ संख्या 4– 22 अगस्त 2020